International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थितिः समस्याएँ व समाधान

डॉ रजनी रानी, सहायक प्रोफेसर(हिन्दी)

चौधरी देवीलाल वश्व वद्यालय सरसा

सकल सृष्टि में भाषा का वचारों व संवेदनाओं के आदान प्रदान के लए बहुत महत्व है। भाषा का वकास हैनिक जीवन में और दैनन्दिन जीवन से होता है। भाषा के वकास मे आम जन की भू मका [सर्वा धक होती है। शासन और प्रशासन की भू मका अत्यल्प और अपने हित तक सी मत होती है। भारत में तथा क थत लोकतंत्र की आड मे अति हस्तक्षेपकारी प्रशासन तंत्र दिन प्रतिदिन मजबूत है।- जिसका कारण संकु चत संकीण राजनीति स्वार्थ तथा बढ़ती असहिष्णुता है। राजनीति जब समाज पर हावी हो जाती है तो सहयोग सद्भाव सहकारत और सर्व स्वीकारता के लए स्थान नहीं रह जाता। दुर्भाग्य से भा षक परिवेश में यही वातावरण है। ही भाषा भाषी अपनी सु वधा के अनुसार देश की भाषा नीति चाहते है। यहाँ तक की परम्परा प्रसां गकता भावी आवश्कता या भाषा वकास की संभावना के निष्पक्ष आकलन को भी स्वीकार्यता नहीं है। भाषा के वकास में आम जन की भू मका सर्वा धक होती है। शासन और प्रशासन की भू मका अत्यलप और अपने हित तक सी मत होती है। भारत मे तथा क थत लोकतंत्र की आड़ में अति हस्तक्षेपकारी प्रशासन तंत्र दिन व दिन मजबूत हो रहा है। जिसके कारण संकु चत संकीर्ण राजनीति स्वार्थ तथा बढती असहिष्णुता है राजनीति जब समाज पर हावी हो जाती हैं। जो सहयोग और सद्भाव सहकार और सर्व स्वीकारता के लए स्थान नही रह जाता। दुर्भाग्य से भा षक परिवेश मे यही वातावरण है। ही भाषा भाषी अपनी सु वधा के लए देश की भाषा नीति चाहता है। यहाँ तक क परपरा प्रसां गकता भावी आवश्यकता या भाषा वकास की संभावना के निष्पक्ष आकलन को भी स्वीकार्यता नही है। सं वधन की 80 अनुसूची मे सम्मि लत होने की दिशा हीन होड जब जब जहाँ बहा आंदोलन का रूप लेक लाखों लोगों को बहुमूल्य समय तथा उर्जा तथा राष्ट्रीय संपति के वनाश का कारण बनता है आठवी सूची मे जो भाषाएं सम्मि लत है उनका कतना वकास हुआ या जो भाषा सूची में ना है। उनका कतना वकास अवरूद्ध हुआ इस का आकलन कये बिना यह होड स्थानीय नेताज तथा साहित्यकारों द्वारा निरंतर वस्तारित की जाती है। वडंबना यह है क राजस्थानी नाकी कसी भाषा का अस्तित्व न होते हुए उसे राज्य की अ धकृत भाषा घो षत कर दिया जाता है। और उसी राज्य में प्रच लत 40 से अ धक भाषाओं के समर्थक पारस्परिक प्रतिददिया के कारण यह होते देखते रहते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राष्ट्रीय भाषा और राज्य भाषा राजकाज चलाने के लए जिस भाषा को अ धसंख्य लोग समझते है। उसे राज भाषा होना चाहिए कन्तु वदेशी शासको ने खुद की भाषा को गुलाम देश पर थोप दिया उर्दू और अंग्रेजी इसी तरह थोपी और बाद में प्रच लत रह गई भाषाएँ है। शासकों की भाषा से जुड़ने की . मान सकता और उसका उपयोग कर खुद को शासक समझने की भ्रामक धारणा ने इसके प्रति आर्कषण को बनाये रखा है। देश का दुर्भाग्य क अंग्रेजो के जाने के बाद भी अंग्रेजी प्रेमी प्रशासक और भारतीय अंग्रेज प्रधानमंत्री के कारण अंग्रेजी का महत्व बना रहा तथा राजनैतिक टकराव में भाषा को घसीट कर हिंदी को ववादास्पद बना दिया गया कसी देश मे कतनी भी भाषाएँ जन समान्य द्वारा उपयोग की जाती है। उनमे से कोई भी अराष्ट्र भाषा नही है। अर्थात वे सभी राष्ट्रभाषा है और अपने अपने आंचल में बोली जा रही है। बोली जाती रहेगी। निरर्थक ववाद की जड़ मटाने के लए सभी भाषाओं बो लयों को राष्ट्र भाषा घो षत कर आवांछित होड़ को समाप्त कया जा सकता है। इससे अनचाहे होरहा हिन्दी वरोध अपने आप समाप्त हो जायेगा। 700 से अ धक भाषाए राष्ट्रभाषा हो जाने से सब एक साथ एक स्तर पर आ जाएगी हिंदी को इस अनुसूची में रखा जाए या निकाला जाए कोई अंतर नहीं पड़ता पढ़ना है हिंदी वश्वव्यापी हो चुकी है जिस तरह कसी भी देश का धर्म न होने के बावजूद सनातन धर्म और कसी भी देश की भाषा में होने के बावजूद संस्कृत का अस्तित्व था है और रहेगा वैसे ही हिंदी भी बिना कसी के समर्थन और वरोध के चलते उल्टी रहे 700 से अ धक भाषाएं बो लयां राष्ट्र भाषा हो हो जाने से पारंपरिक ववाद मटेगा कोई सरकार इन सबको नोट आदि पर नहीं छाप सकेगी इनके वकास पर ना कोई खर्च होगा या कसी एक आदमी की जरूरत होगी जिसे जनसामान्य उपयोग करेगा वही वक सत होगी कंतु राजनीति और प्रशासन की भू मका निष्पक्ष होगी।

हिंदी के प्रचार की समस्यविडंबना यह है क हिंदी को सर्वा धक क्षति तथाक थत हिं -दी समर्थकों से सी हुई और हो रही है हिंदी की आड़ में खुद के हिंदी प्रेमी होने का ढिंढोराकोई देश या व्यापारी नहीं सीख सकता इस लए वदेशीयो के लए हिन्दी ही भारत की सम्पर्क भाषा होगी। स्थिति का लाभ लेने के लए देश मे दिसा रोजगार पार्क हो | हिन्दी के साथ कोई एक वदेशी भाषा सख कर युवा जन उस देश मे हिन्दी सीखने का काम करेगा। ऐसे पाठयक्रम हिन्दी की स्वीकार्यता बढाने के साथ बेरोजगारी कम करेगा। कोई भारतीय भाषा इस स्थिति में नहीं है क यह लाभ ले और दे सके।

हिन्दी मे हर वषय की कताबे लखी जाने की सबसे अ धक जरूरत है। यह कार्य सरकार नही हिन्दी के के जान कारों को करना है। कताबे अंतरजाल पर हो तो इन्हें पढ़ना समझना आसान हो जायेगा । हिन्दी मे मूल शोध कार्य हो केवल नकल करना निरर्थक है। तकनीकी यांत्रिक वज्ञान और अनुसंधान क्षेत्र में हिन्दी की प्रर्याप्त साहित्य की कमी तत्काल दूर की जानी जरूरी है। हिन्दी की सरलता या कठिनता के निरर्थक व्यायाम को बन्द कर हिन्दी की उपयुक्ता पर ध्यान देना होगा हिंदी अन्य भारतीय भाषाओ को गले लगाकर ही आगे बढ़ सकती है। उनका गला दबाकर या गला काटकर हिन्दी भी अपने आप समाप्ति कं पथ पर अग्रसर है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हिन्दी भाषा के व वध रूप

राजभाषा कसी भी देश का राज कार्य जिस भाषा मे होता है। उसे राजभाषा की संज्ञा दी जाती है। - सामान्यतः देश के बहुसंख्यक लोगो द्वारा प्रयोक्त भाषा को राजभाषा के रूप में स्वर्कात दी जाती है। इस से देश के जन सामान्य और प्रशासको के माध्य सहज संवाद और वार्तालाप सहज होजा है। इस प्रकार देश करी राष्ट्र भाषा को ही राज भाषा पद पर प्रतिष्ठित कया जाता है।

14 सतम्बर 1949 को हिंदी भारत संघ के राजभाषा के पद पर प्रति षठत की गई भारतीय सं वधान के अनुछेद 343 से 35 तक देश मे हिन्दी प्रयोग को दिशा देने के लए नियम निर्धाति कये गये है। भारतीय सं वधान मे स्पस्ट रूप से उल्लेख कया गया है। भारत संघ की राजभाषा हिन्दी और ल प देवनारी होगी। आगे यह भी संकेत कया गया है। कपीटने वाले जब पयो और संस्थाओं ने हिंदी का कोई भला नहीं कया खुद का प्रचार कर नाम और दाम बटोरकर हिंदी वरोध के आंदोलन को पढ़ने का अवसर दिया हिंदी को ऐसी नारेबाजी और भाषणबाजी ने बहुत हानि पहुंचाई है जनवरी में ऐसे ही हिंदी प्रेमी भोपाल में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री और सरकार की प्रशंसा के हिंदी पढ़कर साहित्य और भाषा में फूट डालने का काम कर रहे थे उसी सरकार की हिंदी वरोधी नीतियों के वरोध में बगुला भगत चुप्पी साधे बैठे है हिंदी समर्थक मठाधीशों से हिंदी रक्षा करें हिंदी के नाम पर अन्याय अत्याचार करने वाले आयोजक हो तो हिंदी वरोध होगा हिंदी वरोधी नहीं होगा जब कसी भाषा क्षेत्र में उसको छोड़कर हिंदी की बात की जाएगी तो स्वाभा वक है क उस भाषा को बोलने वाले हिंदी का वरोध करेंगे बेहतर है क हिंदी के पक्षधर उस भाषा को हिंदी का स्थानीय रूप मानकर उसकी वकालत करें ता क हिंदी के प्रति वरोध भाव मत हो

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की समस्या कसी भाषा बोली को अंचल के बाहर प्रकृति होने से दो व भन्न भाषाओं गो लयों के लोग पारंपरिक वार्ता में हिंदी का उपयोग करेंगे तब हिंदी की संपर्क भाषा की भू मका अपने आप बन जाएगी आप सभी स्थानीय भाषाएं हिंदी को प्रतिस्पर्धा मानकर उसका वरोध कर रही हैं तब सभी स्थानीय भाषा हिंदी को अपना पूरक मानकर समर्थन करेंगे उन भाषाओं में बो लयों में जो शब्द नहीं है हिंदी से लए जायेंगे हिंदी में भी उनके कुछ शब्द जुड़ेंगे इससे सभी भाषाएं संगीत होंगी।

रोजगार की दृष्टि से हिंदी की समस्या हिंदी के हितै षयों को यदि हिंदी का भला करना है तो- नारेबाजी और सम्मेलन बंद कर हिंदी के शब्द सामर्थ्य और अ भव्यक्ति सामर्थ्य बढ़ाने के लए हर वषय हिन्दी मे लखा जाए। ज्ञान वज्ञान के ही क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग कया जाए हिन्दी के माध्यम माध्यम से वार्तालाप पत्राचार शक्षण आदि के लए शासन नहीं नागरिकों को आगे आना होगा। अपने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बच्चो को अंग्रेजी से पढ़ाने और दूसरों को हिन्दी मे उपदेश देने का पाखंड बंद करना होगा हिन्दी की रोजगार क्षमता बढ़ेगी तो युवा अपने आप उस और आयेगें। भारत दूनिया का सबसे बड़ा बाजार है। और इस बाजार में आम ग्राहक सबसे ज्यादा हिन्दी ही समझते है। 700 भाषाएँ तो दूनियों काराजकीय कार्य में नागरी का अंतराष्ट्रीय रूप ही प्रयोक्त होगा। आर्थात नागरी के मूल चनो के स्थान पर नागरी के आंतराष्ट्रीय चहन ही प्रयुक्त होगा।

के प्रयोग को दिशा और गति देने के लए योजनाएं बनाई गई। हिंदी कार्यान्वयन के लए देश को तीन मुख्य दर्गा में वभक्त कया गया।

1 क वर्गा इसमे हिंदी भाषी क्षेत्र के प्रदेशों को रखा गया। उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश बिहारराजस्थान आदि वर्तमान समय मे हरियाणा हिमाचल प्रदेश झारखण्ड आदि इसी क्षेत्र से आते है

2 ख वर्गा इसमे उन भाषा क्षेत्रो को स्थान दिया -गया है। जिनमें क्षेत्रों के भाषाओं की प्रवृत्तियो हिंदी से पर्याप्त मेल खाती हैं ये भाषा भाषी एक दूसरे को भाषा के पर्याप्त रूप मे समझ सकते हैं। इस वर्गा के मुख्य प्रदेश पंजाब गुजरात महाराष्ट्र केन्द्र शा सत प्रदेश है।

3 ग वर्गा इस वर्गा में द क्षण के उन -भाषा भाषी प्रदेश को रखा गया है। जिन क्षेत्रों में भाषा भाषी और हिंदी भाषीयो में भाषा के आधार पर आपस मे संवाद कठिन होता है। अस दर्गा मे बंगाल उडीसा असम त मल कन्नड तेलगु भाषाओं का प्रयोग होता है।

अनुच्छेद 345 में स्पष्ट कया गया है क 15 वर्ष तक हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा । राष्ट्रपति की समीक्षा पर हिंदी प्रयोग सुनिश्चित होगी।

• अनुच्छेद 344 मे राष्ट्रपति को पांच वर्ष का आयोग गठित कर राजभाषा की दिशा निधारित

होगी।

-अनुच्छेद 348 में न्यायलया मे हिंदी प्रयोग की योजना है। यहां प्रावधान है। जब तक संसद व ध द्वारा व्यवस्था उपलब्ध न करे तब तक कार्य अंग्रेजी में होगा ।

अनुच्छेद 349 के अनुसार संसद के कसी सदन में कसी सदन से पारित राजभाषा संबं धत वधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति अनिवार्य होगी।अनुच्छेद 300 के अनुसार कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या को संघ अथवा राज्य के करी के सामने मानय भाषा में रखा सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुच्छेद 301 में सं वधान की सूची में स्थान प्राप्त भाषाओं को महत्व दिया गया है। भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में हिंदी के प्रचार प्रसार के निर्देश है। इसी में हिंदी की शब्दावली को समृद करने हेतु संस्कृत के साथ अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने का संकेत है।

सं वधान के प्रारं भक निर्देशनुसार 15 वर्ष में ही भारत के राज काज में हिंदी को गति मल जानी थी। कंतु आज भी हिंदी प्रयोग की स्थिति वचारणीय है।

2 राजभाषा के रूप में हिन्दी कसी देश या राष्ट -्र मे बहुसंख्यक लोगों द्वारा समझी और प्रयोग की जाने वाली भाषा को राष्ट्र भाषा की संज्ञा दी है। देश के व भन्न क्षेत्रों और प्रदेशां के लोग व्यवहारिक सन्दर्भ में इस ही भाषा का प्रयोग करते है भारत की राज भाषा हिंदी है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के उदभव काल से हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा रही है। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की अंतिम कड़ी अपभ्रंग की प्रमुख सात शाखाओं में से शीर सेनी अर्धमागधी और खस के वक सत पश्चिमी हिंदी राजस्थनी पूर्वा हिंदी और पहाड़ी हिंदी के ही रूप है। इसके साथ मागधी के वक सत बिहारी हिंदी भी एक प्रभावी रूप है। भौगो लक दृष्टि से उतर प्रदेश बिहार झारखण्ड हिमाचल प्रदेश और दिल्ली हिंदी भाषी प्रदेश है। इन प्रदेशों के व भन्न क्षेत्रों में प्रयोक्त सहज मावा व्यक्ति की बो लया हिंदी राज भाषा की प्रमुख आधार भू म है। इस प्रकार वस्तृत भौगो लक क्षेत्रों में प्रयुक्त राष्ट्रभाषा हिंदी के स्वरूपों की व वधता स्पष्ट होती है।

भारतीय सं वधान में हिंदी के राष्ट्रहोने का कही उल्लेख नहीं है। भारतीय सं वधान में हिंदी को राजभाषा का पद दिया गया है। शासन प्रशासन कार्यपा लका का और न्यायपा लका में प्रयुक्त होने वाली हिंदी राजभाषा है। राजकाज में प्रयुक्त होने वाली हिंदी भी राष्ट्रभाषा का एक वशेष अंग है। राष्ट्रभाषा के इस रिजभाषाई स्वरूपो के प्रचार प्रसार के लए सं वधान में योजनाएँ बनाती है। सरकार और व भन्न संस्थाएं भी अस कार्य में लगी है। साहित्य समाजसाहित्यिक और राजा आदि रूपकरण सम्मत होता है। जो व भन्न वाि अन्य के साथ मलकर प्रयुक्त या कलकतिया हिंदी में अ भक्ति की सहजताको महत्व दिया जाता है यहा व्याकरण की अपेक्षा नहीं होती राष्ट्रभाषा आदि का पूरे भारत का एक सूत्र में हुए हैं। सम्पर्क भाषा की भू मका में अ भव्यक्ति का आधार बनी हुई है।

भाषा मे हिन्दी भावयक्ति का भी माध्यम भाषा ही है। सा -हित्य का सृजन भी भाषा के आधार पर होता है। भाषा के अभाव में साहित्य ही नही भाव व्यक्ति असंभव हो जाएगी। प्रत्येक की एक भाषा से संबं धत होता है। तथा हिंदी साहित्य का आधार भाषा हिंदी है। तो अंग्रेजी साहित्य की अंग्रेजी बंगाल की बंगाला और संस्कृत की संस्कृत भाषा अलग अलग क्षेत्रों में ज्ञान वज्ञान का अध्यान व अध्ययन व चंतन मनन कसी कसी भाषा मे कया जाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिभाषा जिस भाषा के आधार पर ज्ञान वज्ञान के व ध क्षेत्रों का अध्ययन अध्यापन और चंतन वश्लेशन संभव हो उसे माध्यम भाषा कहते हैं। वर्तमान समय मे समाज वज्ञान वा णजय वज्ञान व ध प्रबंधन और ज्योतिस आदि वषयों का अध्ययन और अध्यापन हिंदी के माध्यम से होने लगा है। व भन्न संस्था और वश्व वद्यालय में व भन्न वषयों के उतर हिंदी के माध्यम देने की सु वधा है। राज भाषा के नियम अनुसार कार्यपा लका और न्यायपा लका की व धयों में हिंदी का प्रयोग माध्यम भाषा के रूप में होना चाहिए भारत सदियों से वदेशी शासको के अ धपत्य मे रहा है। इस लए यहां की राज भाषा अंग्रेजी बन गई थी इसके साथ शक्षा और अन्य क्षेत्रों की गति व धयों की माध्यम भाषा अंग्रेजी थी। स्वतंत्र प्राप्ती के बाद 14 सतंबर 1949 को हिंदी राज भाषा बनी । अब व भन्न क्षेत्रो को शक्षा सरल बनने के लए हिंदी को माध्यम भाषा बनाने की आवश्यकता सामने आई। क्यों क भारत के बहुसंख्यक लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। यह तय बात है क कोई भी व्यक्ति अपने भावों को जितनी सरलता और सहज और स्वा वकता से अपनी भाषा में व्यक्त कर सकता है। वैसर अ भव्यक्ति अन्य भाषा में नहीं हो सकती है। मनुष्य का प्रारं भक चंतन अपनी भाषा में होता है। उसके पश्चात यह दूसरी भाषा में अनुदित कर भावव्यक्ति का मार्ग अपनाता है। हिंदी को माध्यम भाषा केरूप मे सफल प्रयोग के लए मानव संसाधन वकास मंत्रालय के वज्ञानिक तथा तकनिक शब्दावली आयोग द्वारा व भन्न वषयों की परिभाषा शब्दावलीयों का प्रयोग करवाया जा चुका है। माध्यम के रूप में हिंदी को ज्यादा समृदी व प्रचार प्रसार की दरकार है। हिन्दी को ज्ञान वज्ञान के व भन्न वषयो की माध्यम भाषा के रूप में अपनाने के लए सरकार व भन्न संस्था और व्यक्तिगत रूप में प्रचार चल रहा है। व भन्न वषयों की हिंदी में पुस्तके लखई जा रही है और इसे प्रोत्साहन देने के लए अनेक पुरस्कार योजनाए भी चलाई जा रही है।

संचार भाषा भाव संप्रेषण और संचार मुख्-यतः भ षक और भा षकेतर दो आधारो पर होता है। भा षक अ भव्यक्ति मुख्यता उच्चारित और ल खत दो रूपों में होता है। उच्चारित भाषा में ध्यत्मक भ गमा से उसका प्रभावी रूप सामने आता है। तो ल खत भाषा भाव व्यक्ति को समय और स्थान को पार करने की शक्ति प्रदान करता है। वर्तमान युग का संचार युग म डया युग और कम्प्युटर युग आदि नामो से अ भहित कया जाता है। इन नामा से स्पष्ट होता है क मनुष्य एक स्थान पर बैठे बैठे वश्व के कोने कोने का समाचार व ध माध्यम से संप्रेषण के आधार स्वरूप सामने आते है। उसे संचार भाषा कहते है। हिंदी भारत में ही नहीं भारत से बाहर गयाना सूरीनाम फली मारीशर ट्रिनीडाड कनाडा अमेरीका आदि देशों मे प्रयुक्त होती है। संचार भाषा का वस्तार और उसके स्वरूप व वधता को निम्न संदर्भ मे देखा है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आकाशवाणी और हिन्दी संचार के श्रव्य माध्यमो मे आकाशवानी का वशेष महत्व है। -

आकाशवाणी पर हिंदी का प्रयोग भारत के अतिरिक्त वदेशो मे भी होता है। वी वी सी लंदन सेहिंदी मे प्रचार कम बहुत पहले स े चल रहा है। आकाशवाणी की श्रव्य बहुत पहले स े चल हीहै। आकाश्वानी की श्रव्य भाषा की शुद्धता पर ऐसी भाषा की प्रमुख वशेषता होती है।आकाशवाणी की भाषा को व्यायकरण सम्मत रूप अपनाने के साथ उसमे भाव अनुसार अवरोहआरोह का वशेष ध्यान रखना होता है। ऐसी भाषा मे छोटे छोटे रचना का प्रयास कया जाताहै। जिससे क्ता या वाचय तथा संभव सौस कर सीमा मे वाक्य पूरा कर ले आकाशवाणी काप्रसारण कसी वशेष वर्ग या कसी वशेष वद्ववान के लए नहीं मुख्यतः जनसमान्य के लएहोता है इस लए सरल व्यवहारिक और वौधगामय भाषा का प्रयोग कया जाता है।रूप मे सफल प्रयोग के लए मानव संसाधन वकास मंत्रालय के वज्ञानिक तथा तकनिक शब्दावली आयोग द्वारा व भन्न वषयों की परिभाषा शब्दावलीयों का प्रयोग करवाया जा चुका है। माध्यम के रूप में हिंदी को ज्यादा समृदी व प्रचार प्रसार की दरकार है। हिन्दी को ज्ञान वज्ञान के व भन्न वषयो की माध्यम भाषा के रूप में अपनाने के लए सरकार व भन्न संस्था और व्यक्तिगत रूप में प्रचार चल रहा है। व भन्न वषयों की हिंदी में पुस्तके लखई जा रही है और इसे प्रोत्साहन देने के लए अनेक पुरस्कार योजनाए भी चलाई जा रही है।संचार भाषा भाव संप्रेषण और संचार मुख्यतः- भ षक और भा षकेतर दो आधारो पर होता है। भा षक अ भव्यक्ति मुख्यता उच्चारित और ल खत दो रूपों में होता है। उच्चारित भाषा में ध्यत्मक भ गमा से उसका प्रभावी रूप सामने आता है। तो ल खत भाषा भाव व्यक्ति को समय और स्थान को पार करने की शक्ति प्रदान करता है। वर्तमान युग का संचार युग म डया युग और कम्प्युटर युग आदि नामो से अ भहित कया जाता है। इन नामा से स्पष्ट होता है क मनुष्य एक स्थान पर बैठे बैठे वश्व के कोने कोने का समाचार व ध माध्यम से संप्रेषण के आधार स्वरूप सामने आते है। उसे संचार भाषा कहते है। हिंदी भारत में ही नहीं भारत से बाहर गयाना सूरीनाम फली मारीशर ट्रिनीडाड कनाडा अमेरीका आदि देशों मे प्रयुक्त होती है। संचार भाषा का वस्तार और उसके स्वरूप व वधता को निम्न संदर्भ मे देखा है।आकाशवाणी और हिन्दीसंचार के -

श्रव्य माध्यमो मे आकाशवानी का वशेष महत्व है।आकाशवाणी पर हिंदी का प्रयोग भारत के अतिरिक्त वदेशो मे भी होता है। वी वी सी लंदन सेहिंदी मे प्रचार कम बहुत पहले स े चल रहा है। आकाशवानी की श्रव्य बहुत पहले स े चल हीहै। आकाशवाणी की श्रव्य भाषा की शुद्धता पर ऐसी भाषा की प्रमुख वशेषता होती है।

आकाशवाणी की भाषा को व्यायकरण सम्मत रूप अपनाने के साथ उसमे भाव अनुसार अवरोहआरोह का वशेष ध्यान रखना होता है। ऐसी भाषा मे छोटे छोटे रचना का प्रयास कया जाताआकाशवानी से साहित्य समाजिक वैज्ञानिक व्यावसायिक कृ ष संबं धत स्वास्थ व च कत्सा संबंधी और व ध मनोरंजन मनोरंजन वार्ता परिसंवाद नाटक गीत और झल कया प्रसारित की जाती है।दूरदर्शन और हिन्दी इव्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

एवं दृश्य माध्यमो में दूरदर्शन का सर्वापरि महत्व है। लगभग चार दश कमे दूरदर्शन का वश्वव्यापी प्रभाव सामने आ गया है। दूरदर्शन के माध्यम से भारत वर्ष के ही नहीं वश्व के व ध क्षेत्रो में घटने वाली घटनाओ को देखते हुए ववरण सुन भी सकते है। इसमे उच्चारित ल खत भाषा के साथ प्रस्तुतकर्ता की गति व धयों के साथ अन्य चत्रातमक शब्द भी होते है। मनमोहन रंगो की योजना के साथ अ भव्यक्ति कमा प्रभावी रूप सामने आता है। भारत के बहुसंख्यक हिंदी भा षयों को दृकर्षटगत कर उपभोगता संस्कृत में हिंदी को सम्मानीय स्थान मला है। दूरदर्शन पर आने वाले सरियलो की प्रतिस्पर्ध मे हिंदी का महत्व स्पष्ट होता है। वज्ञापनों में हिंदी के प्रबल रूप से दूरदर्शन में हिंदी के उज्जवल भ वष्य का स्पष्ट ज्ञान होता है। दूरदर्शन के व वध कार्यक्रमो और व वध चेनलो पर हिंदी के के स्वरूप की व वधता सामने आती है। यदि उदघोष की परिभा षत हिंदी के मानकता का आभास होता होता है। तो संवाद परिचर्चा व्यंग्य आदि प्रस्तुतियो मे हिंदी भाषा की व वधता सामने आती है। अंग्रेजी अंग्रेजी म श्रत हिंदी संवाद भी साक्षत्कारो में अ भनेताओ द्वारा बोले जाते है । जैसे

1 आप कह रहे है क उनका चेहरा अच्छा है।

2 ऐक्चुअली मै बहुत बिजी हूँ।

प्रंट म डया और हिंदी इसके अंतरगत समाचार पत्र और पत्रिकाए आती है। समाचार पत्रो मे मा सक - पा क्षक सप्ताहिक और दैनिक रूप सामने आते है वर्तमान समय में हिंदी दैनिक समाचार पत्रो बलशाली प्रतिस्पर्धा चल रही है। हिंदी दैनिक समाचार पत्रो मे एक साथ कई नगरो से होने लगा हुै। प्रराम्भ मे समाचार संप्रेषण के लए समाचार पत्रो का प्रकाशन होता है। अब तो समाचार पत्र मे मानव जीवन से जुडे समाजिक आ र्थक स्वास्थ वज्ञान च कत्सा खेलकूद कृ ष संस्कृति धर्म चल चत्र और व ध शक्षा आदि पक्षो के समाचार और ववरण होते है। इनके लए वशेषाक या पृष्ठ निर्धरित कर दिये गये है। इस प्रकार समाचार पत्रो की परिभाषा मे पर्याप्त व कता होती है साहित्य ज्योतिष अध्यात्म और दर्शन संदर्भ मे 10 है। जिससे क्ता या वाचय तथा संभव सौस कर सीमा मे वाक्य पूरा कर ले आकासवानी का

प्रसारण कसी वशेष वर्ग या कसी वशेष वद्ववान के लए नहीं मुख्यतः जनसमान्य के लएहोता है इस लए सरल व्यवहारिक और वौधगामय भाषा का प्रयोग कया जाता है।परामार्जित हिंदी मलती है तो तो समाचार भाषा की सरल सहज और पर्याप्त बोध होती है। खेल कूद और कृ ष आदि के ववरणों में उनसे संबं धत हिंदी भाषा का रंग रूप होता है। तो व्यापार और व्यवसाय की भाषा का अपना ही रंग होता है। यथा सोना गरम और चांदी नरम या सोने के भाव में तेजी आई और यादी सस्ती हो गई। समाचार पत्रों के शीर्ष के पत्रों की भाषा वशेष चमत्कारि और आ कर्षत होती है।संचार के अन्य माध्यम माध्यम और हिन्दी वर्तमान समय मे तार टेलीफोन फक्स इन्टरनेट और मोवाईल संदेश देने वाले

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गति शील माध्यम है। तार मे हिंदी भाषा को पदनुसार प्रयोग करने की व्यवस्था है इससे तार शुल्क कम देने होते है। इसके लए पूरे पद को शरोरेखा में मलाना होता है। यथा समान्य भाषा तार भाषा तुम्हारे लए जितने डाक से तुम्हारे लए पुस्तके डाक से भेज रहा हूँ। टेलीफोन से यदि सीधे संवाद का का अवसर प्रदान करता है। तो फक्स ल खत साम्रगी को छाया रूप मे गत्तव्य तक पहुँचा देता है। हिंदी भा षयों की बहुत संख्या इनके प्रयोग का प्रमाण है। इंटरनेट पूरे वश्व को जोड़ कर वश्व गांव बना देने वाला माध्यम है। इंटरनेट और मोबाइल के बढ़ते प्रयोग से हिंदी भाषा का व्यरिक वस्तार और नया रूप मलता है।

नागरी ल प का मानक रूप भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी की भी लपी नागरी है। वर्तमान समय में दो अथवा दो से अ धक भाषा भा षयों के भाव आद प्रदान के लए नाग ल प का प्रयोग संपर्क ल प के रूप में कया जाता है। देवनागरी के बढ़ते प्रयोग संदर्भ क दृष्टि गत कर इसमे अपेक्षीत सुधार कये गये है। सुघर प्र कया के आधार पर यह ल प्रर्याप्त वैज्ञानिक हो गई है। वर्तताान समय की देवनागरी का स्वरूप प्रर्याप्त अनुकूल अ वैज्ञानिक हो गया है। जिसमे भाषा वेदो और संस्थओं के साथ केन्द्रीय हिंदी निर्देशालय वशेष भू मका रही है।